दिनांक :- 18-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- 1 th (अनुषांगिक)

विषय :- प्रति० इतिहास

इकाई :- तृतीय

अध्याय :- तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य

रोम साम्राज्य दूर-दूर तक फैला हुआ था। इसके विशाल राज्य क्षेत्र में आज का अधिकांश यूरोप और उर्वर अर्द्ध चंद्राकार (Fertile crescent) यानी पश्चिमी एशिया तथा उत्तरी अफ्रीका का बहुत बड़ा हिस्सा शामिल था। इस अध्याय में हम यह देखने का प्रयत्न करेंगे कि इस साम्राज्य का गठन कैसे हुआ : किन किन राजनीतिक ताकतों ने इसके भाग्य को बनाया - सवांरा और इस साम्राज्य

Scanned with CamScanner

के लोग किन-किन सामाजिक समूहो मे विभाजित थे आप देखेंगे कि यह साम्राज्य अनेक स्थानीय संस्कृतियों तथा भाषाओ के वैभव से सम्पन्न था। वहाँ स्त्रियों की कानूनी सुदृढ़ थी, वैसी स्थिति आज के अनेक देशो में भी देखने को नही मिलती है। लेकिन वहाँ कि अर्थव्यवस्था बहुत कुछ दास श्रम के बल पर चलती थी जिस वजह से जनता का अच्छा खासा भाग स्वतंत्रता से वंचित रह जाता था। पाँचवी शताब्दी और अनेक उसके बाद के समय से पश्चिम में साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया लेकिन अपनी पूर्वी आधे भाग में अखंड और अत्यंत समृद्ध बना रहा। अगले अध्याय मे आप खिलाफत के बारे में पढ़ेंगे। खिलाफत इस समृद्ध कीनीव पर स्थापित हुआ और उसने इसकी शहरी तथा धार्मिक परंपराओ को विरासत में प्राप्त किया।

रोम के इतिहासकारों के पास स्त्रोत-सामग्री का विशाल भंडार है।

इस संपूर्ण स्त्रोत-सामग्री को तीन वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है (क) पाठ्य सामग्री (ख) प्रलेख या दस्तावेज़ और (ग) भौतिक अवशेष। पाठ्य स्त्रोतों में शामिल है: समकालीन व्यक्तियों द्वारा लिखा गया उस काल का इतिहास (जिसे वर्षवृत्तांत (Annals) कहा जाता था क्योंकि ये वृत्तांत प्रतिवर्ष लिखे जाते थे) पत्र, व्याख्यान, प्रवचन, कानून आदि दस्तावेज़ी स्त्रोत मुख्य रूप से उत्कीर्ण अभिलेखों या पैपाइरस या पेड़ के पत्तों आदि पर लिखी गई पांडुलिपियों के रूप में मिलते है।

उत्कीर्ण अभिलेखों आमतौर पर पत्थर की शिलाओं पर खोदे जाते थे, इसलिए वह नष्ट नहीं हुए और बहुत बड़ी में यूनानी और लातिनी में पाए गए गए। पैपाइरस एक सरकंडा जैसा पौधा था जो मिस्र में नील नदी के किनारे उगा करता था और उसी से लेखन

सामग्री तैयार की जाती थी रोजमर्रा की जिंदगी मे उस का व्यापक इस्तेमाल किया जाता था ! हजारो की संख्या मे संविदा पत्र और सरकारी दस्तावेज आज भी पैपाइरस पत्र पर लिखे हुए पाए गए है और पैपाइरोलोजिस्ट यानी पैपाइरस शास्त्री कहे जाने वाले विद्वानो द्वारा प्रकाशित किए गए है भौतिक अवशेषो मे अनेक प्रकार की खोजे गए चीजे शामिल है जो मुख्य रूप से पुरातत्वविदो को (खुदाई और क्षेत्र सर्वेक्षण आदि के जरिए अपनी खोज मे मिलती है : जैसे: इमारते, स्मारक और अन्य प्रकार की संरचनाए, मिट्टी के बर्तन, सिक्के, पच्चीकारी का सामान, यहाँ तक कि संपूर्ण एक भू-दृश्य (जैसे हवाई छाया कन द्वारा प्राप्त) इसमे से प्रत्येक स्रोत हमे अतीत के बारे मे ही एक प्रकार की ही जानकारी देते है। इन जानकारियो को मिलकर देखना अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

Scanned with CamScanner

लेकिन कितनी अच्छी तरह से इतिहासकार इन स्त्रोतों के तथ्यों में अंतर्संबंध बनाता है यह उसकी कुशलता पर निर्भर करता है।

ईसा मसीह के जन्म से लेकर सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में 630 के दशक तक की अवधि में अधिकांश यूरोप, उत्तरी अफ्रीका और मध्य-पूर्व तक के विशाल क्षेत्र में दो सशक्त साम्राज्यों का शासन था ये दो साम्राज्य रोम और ईरान के थे रोम तथा ईरान के लोग आपस में प्रतिद्वंद्वी थे और अपने इतिहास के अधिकांश काल में वे आपस में लड़ते रहे। उनके साम्राज्य एक दूसरे के बिलकुल पास थे। उन्हें भूमि की एक संकरी पट्टी जिसके किनारे फ़रात नदी बहा करती थी, अलग करती थी। इस अध्याय में हम रोम के साम्राज्य के बारे में पढ़ेंगे मगर कहीं-कहीं प्रसंगवश रोम के प्रतिद्वंद्वी ईरान का भी उल्लेख करते होंगे।

Scanned with CamScanner

यदि आप नीचे दिए गए मानचित्र पर नज़र डाले तो देखेंगे कि यूरोप और अफ्रीका के महाद्वीप एक समुद्र द्वारा एक दूसरे को अलग किए हुआ है जो पश्चिम मे स्पेन से लेकर पूर्व में सीरिया तक फैला हुआ है। इस समुद्र को भूमध्यसागर कहा गया है और यह उन दिनों रोम साम्राज्य का हृदय था। रोम का भूमध्यसागर और उत्तर तथा दक्षिण की दोनो दिशाओ मे सागर के आसपास स्थित सभी प्रदेशो पर प्रभुत्व था। उत्तर में साम्राज्य की सीमा का निर्धारण दो महान नदियो राइन और डैन्यूब से होता था और दक्षिणी सीमा सहारा नामक अति विस्तृत रेगिस्तान से बनती थी। इस प्रकार इस अत्यंत विस्तृत क्षेत्र में रोम साम्राज्य फैला हुआ था। दूसरी भी कैस्पियन सागर के दक्षिण से पूर्वी अरब तक का समूचा इलाका और कभी-कभी अफ़गानिस्तान के कुछ हिस्से भी ईरान के नियंत्रण में थे

Scanned with CamScanner

इन दो महान शक्तियों ने दुनिया के उस अधिकांश भा
के कुछ हिस्से भी ईरान के नियंत्रण में थे। जिसे चीन
लोग ता-चिन (बृहत्तर चीन मोटे तौर पर पश्चिम)
कहा करते थे।
सामाज्य का आरंभिक काल :—
रोमन साम्राज्य के मोटे तौर पर दो चरणों में बाँटा जा
सकता है, जिन्हें पूर्ववर्ती और परवर्ती चरण कह
सकते हैं। इन दोनों चरणों के बीच तीसरी शताब्दी
का समय आता जो उन्हें दो ऐतिहासिक भागों में
विभाजित करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो तीसरी
शताब्दी के मुख्य भाग तक की संपूर्ण अवधि को
पूर्ववर्ती साम्राज्य और उसके बाद के सामाज्य को
परवर्ती साम्राज्य कहा जा सकता है।
दो महाशक्तियों तथा उनसे संबंधित साम्राज्यों में एक
बड़ा अंतर यह था कि रोमन साम्राज्य है।

Scanned with CamScanner